शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2024
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आधुनिकता, समकालीनता, समसामयिकता और नवीनता के घटक तत्व

डॉ. रीता तिवारी
सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
पीजी कॉलेज, राम नगर
नैनीताल, उत्तराखंड, भारत

आधुनिकता के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए आधुनिक, आधुनिकीकरण तथा आधुनिक भावबोध जैसे शब्दों का विश्लेषण आवश्यक है। इतिहास, परम्परा, समसामयिकता, विज्ञान और धर्म को जोड़कर सामाजिक सम्बंधों और मूल्यों को स्थिर किये बिना आधुनिकता की अवधारणा स्पष्ट नहीं हो सकती। आधुनिकता अपनी नवीनता और विविधता के कारण प्रत्येक साहित्य के अपने सन्दर्भ से जुड़ी होती है। इसे नकल, फैशन या परिवर्तन की ललक से सम्बद्ध नहीं माना जा सकता। ''आधुनिक एक प्रश्नाकुल मानसिकता है; जो हर बंधी बंधाई व्यवस्था, मर्यादा या धारणा को तोड़ती है। इसे चरम या निरपेक्ष नहीं माना जा सकता। यह मुख्य रूप से एक ऐसी मानसिकता है जो किसी एक मूल्य धारणा या सिद्धांत को स्वीकारने से उसे जांचने-पड़तालने पर बल देती है।''1

समकालीन कविता के सन्दर्भ में 'आधुनिकता' की चर्चा व्यापक रूप से हुई है। वहाँ इसे एक नये मूल्य और नूतन कला दर्शन के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है।

आधुनिकतावादी काव्य शहरी जीवन बोध से जुड़ा हुआ है। आधुनिकता की अभिव्यक्ति आवेग और चिन्तन द्वारा हुई है, जो नामदीन, निरर्थक, संवादविहीन जिन्दगी से जुड़कर आधुनिक से जुड़ गया है। आधुनिक परिवेश में शहरी व्यक्ति का जीवन निरर्थक रूप् से बीत रहा है इसलिए उसके सूने जीवन को आधुनिक बोध से जोड़ा गया है।

समकालीनता

हिन्दी में 'समकालीन' शब्द अंग्रजी के 'कंटेम्परी' शब्द के पर्याय के रूप प्रचलित है। कंटेम्परी का अभिप्राय तीन अर्थों में समाहित है :

काल विशेष से सम्बद्ध

व्यक्ति-विशेष के काल यापन से सम्बद्ध

साहित्य, समाज अथवा प्रवृत्ति विशेष से संश्लिष्ट कालखंड

समकालीनता को आँकने के लिए 'आधुनिक' और 'अत्याधुनिक' शब्द महत्वपूर्ण हैं। 'आधुनिक' अधिक व्यापक और मूल्यगर्भित शब्द है। अत्याधुनिक एकदम आज का और लघुतम कालखण्ड का बोधक है। 'समकालीन' अत्याधुनिक को अपने आप में समाहित किये हुए आधुनिक की पीठ पर स्थित कालखण्ड है। धर्मवीर भारती हिन्दी साहित्य में आधुनिकता के साथ-साथ समकालीनता को भी महत्व देते हैं। समकालीन को समझने के लिए आधुनिक युग सन्दर्भ को महत्व दिया जाने लगा। समकालीन एक विचारणीय शब्द है।

समकालीन हिन्दी कविता का अध्याय स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद से आरम्भ होता है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता को समकालीन के नाम से पुकारना अधिक समीचीन है। इसके दो कारण हैं, एक तो यह कि हमारे समय के अधिकांश कवि और लेखक इससे सम्बद्ध रहे हैं। सभी इसकी गति-प्रगति के साक्षी हैं। दूसरे; यह कि स्वाधीनता के बाद की कविता का मूल स्वर पूर्ववर्ती हिन्दी कविता से भिन्न हो गया था। 1947 ईस्वी में भारत की स्वाधीनता इतिहास की एक महान घटना थी। इसने भारतीय जन-जीवन, राजनीति, दर्शन और साहित्य को इतिहास के एक नये मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया। 1949 ईस्वी में पारित स्वतंत्र प्रभुसत्ता सम्पन्न जनतंत्रवादी भारतीय गणराज्य के संविधान ने हमारे सामाजिक जीवन और राष्ट्रीय मानस को नये सिरे से आन्दोलित करना प्रारम्भ किया। राष्ट्रीय क्षितिज पर चेतना का नया आलोक फूटने लगा। स्वतंत्रता के बाद की हिन्दी कविता राष्ट्रीय चेतना के इसी नये आलोक में लिखी गई। नयी आस्था और नये स्वप्न संजोकर काव्य सृजन करने वाले कवियों की रचना ही समकालीन कविता है। स्वतंत्रता के बाद की कविता समकालीन हिन्दी कविता है। उसमें एक नये स्वाधीन हुए देश की आशाएं-आकांक्षाएं प्रतिध्वनित हुई हैं। नये मानव व्यक्तित्व की खोज और नए मनुष्य की प्रतिष्ठा का प्रयत्न उसमें सन्निहित है।

समकालीन हिन्दी कविता में पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा कच्छप गति से विकास करने वाले देश की असफलताओं का विक्षोभ और आक्रोश भी मुखरित हुआ है। नवीन वैज्ञानिक और सामाजिक दृष्टि के उन्मेष के कारण उसमें आधुनिकता की धारणा प्रतिफलित हुई। समकालीन हिन्दी कविता का विकास प्रयोगवाद की पीठ पर हुआ ।

आधुनिकता के वास्तविक अर्थ के विषय में पाश्चात्य एवं भारतीय दृष्टि में भिन्नता है। प्रायः इसकी व्याख्या में आधुनिकता, आधुनिकतावाद, समसामयिकता का उल्लेख होता है, किन्तु इनके मूलभूत अन्तर को स्पष्ट नहीं किया जाता। आधुनिकता का सीधा अर्थ समसामयिकता है।

समकालीन कविता अपने युग एवं परिवेश से सम्पृक्त है। इस कविता में हम अपने वर्तमान को देख सकते हैं। हमारी आशा-निराशा, आकांक्षा-अपेक्षा, राग-विराग, हर्ष-विषाद सब उसमें समाये हुए हैं। राजनीतिक अव्यवस्था, उत्तरोत्तर कठिन होता जा रहा जीवन-यापन, सामाजिक विकृतियाँ और खोखले सिद्धान्त; सबको समकालीन कविता में समेटा गया है। समकालीन कविता का स्वर व्यंग्य एवं आक्रोश से भरा हुआ है और उसमें बौद्धिकता भी प्रचुर मात्रा में है। समकालीन कविता में चित्रित मानव तनावों विसंगतियों व कुण्ठाओं को लिए हुए जीता दिखाई देता है। समकालीन कविता उस मोह-भंग को भी दर्शाती है; जो स्वतंत्रता के बाद लोगों के हृदय में उत्पन्न हुआ था। समकालीन कविता अपने युग से पूरी तरह सम्पृक्त है।

आधुनिकता और समसामयिकता

समकालीनता के साथ-साथ प्रायः समसामयिकता शब्द का प्रयोग भी होता है। कई बार इन दोनों शब्दों का प्रयोग समानार्थी रूप में भी कर दिया जाता है, किंतु इसमें परस्पर अन्तर है। समसामयिक को एक ही काल के व्यक्ति, घटनाक्रम एवं परिस्थितियों से जोड़कर देखा जा सकता है। समसामयिकता और आधुनिकता में पर्याप्त अंतर है। समसामयिकता आधुनिक होने का मानदण्ड नहीं है। आधुनिकता को समसामयिक तक सीमित रखना भी उचित नहीं है। आधुनिकता की सर्जनात्मकता और अर्थवत्ता

समसामयिकता का अतिक्रमण करने में है। रचनाकार को देशकाल की ससीमता में कालजीवी होना पड़ता है और शाश्वत होने के लिए अपनी समसामयिक सीमाओं से ऊपर भी जाना होता है। कालजयी होने के लिए कलाकार अपने परिवेश के प्रति बहुत गहरे में समर्पित होता है। अपनी रचना और दृष्टि को अर्थवत्ता देने के लिए उसे देश कालातीत होना होता है। समसामयिक और शाश्वत परस्पर विरोधी स्थितियाँ नहीं हैं। उनमें हैं और होना चाहिए का अन्तर मात्र है। अनेक समसामयिक अतीत बनकर ही शाश्वत का सृजन करते हैं। एक इतिवृत्त है और दूसरा अनेक इतिवृत्तों के अनुभव संघात से निर्मित भावनात्मक लक्ष्य है।

आधुनिकता समसामयिकता को अपने आधार के रूप में ग्रहण करती है, किन्तु अपनी रचनात्मकता में वह समसामयिकता के उन सन्दर्भों को नकार देती है जो मानव के सांस्कृतिक विकास की गत्यात्मकता को अवरुद्ध करते हैं। समसामयिक होना व्यक्ति में जागरूक होने का भ्रम भले ही उत्पन्न कर दे, किन्तु अपने चिन्तन और सृजन को अर्थ देने के लिए कलाकार को समसायिक तथ्य और घटनाओं को अपनी संवेदना की आंच से पिघलाना ही होता है। वास्तव में युगीन भाव चेतना को पहुँचानने का प्रयत्न प्रत्येक जागरूक साहित्यकार करता है।

युग बोध के संदर्भ में 'नयी कविता' के कवियों की दो मान्यताएँ महत्वपूर्ण हैं। एक तो यह कि वर्तमान जीवन संग्राम का जीवन अर्थात् यह संघर्ष, विघटन एवं अन्वेषण का युग है। दूसरी यह कि वर्तमान ही सब कुछ है। वही हमारे काम का है, क्योंकि हमें उसी में रहना है। अतीत और भविष्य केवल चर्चा का विषय है। 'नयी कविता' में अनेक विरोधों के बावजूद वर्तमान के संत्रास की सफल अभव्यक्ति हुई है। 'नयी कविता' ने युग-बोध को भली भाँति पहचाना है। अपने समय के इसी संदर्भों की परख और पकड़ को समसामयिकता कहा जाता है।

आधुनिकता के साथ सम-सामयिकता के प्रश्न को उठाया जाना स्वभाविक है। कुछ लोग सम-सामयिकता के सन्दर्भ में आधुनिकता को लेते हैं, किन्तु सम-सामयिकता और आधुनिकता का अलग अर्थ है। सम-सामयिकता अंग्रेजी शब्द कंटेम्परेरी को कहते हैं, जिसका संबंध समय से होता है। आधुनिक का संम्बध संवेदना, प्रवृत्ति या शैली से है। समसामयिकता एक तटस्थ सन्दर्भ का अर्थ रखती है। सभी साहित्यकार सामयिक सत्ता की अनुभूति और समकालीन चेतना को अधिक से अधिक व्यापक रूप से रखने का प्रयास करते हैं। समसामयिक साहित्य के अन्दर विषय और वस्तु की व्यापकता रहती है। हिन्दी साहित्य में मैथलीशरण गुप्त रचित 'भारत-भारती' तथा माखनलाल चतुर्वेदी की अधिकांश कविताएं समसामयिक ही कहलायेंगी, क्योंकि उनके काव्य में उनके समय की छाप मिलती है। प्रेमचन्द्र के अधिकांश उपन्यास भी सम-सामयिक साहित्य के अन्तर्गत ही आते हैं। लेखक सम-सामयिक जीवन की घटनाओं पर अपना प्रभाव डालते हैं। और नियंत्रण करने का प्रयास करते हैं।

इस प्रकार आधुनिकता का सम्बन्ध समसामयिक परिवेशों, सामजिक जीवन की बदलती हुई रेखाओं, समस्याओं मान्यताओं एवं विश्वासों से उत्पन्न चेतना से है। आधुनिकता का श्रेय ड्राइंग रूमी सजावट या अर्द्धनग्न वस्त्र पहनकर सड़क पर निकल जाना नहीं है और न तो आधुनिकता कोई बाह्य साज-सज्जा, बनावट और उपकरण है। आधुनिकता व्यक्ति के भीतर की प्रवृत्ति है।

'नयी कविता' आन्दोलन के एक प्रमुख प्रणेता लक्ष्मीकान्त वर्मा का कथन है "आधुनिकता युग-विशेष का गुण है, समसामयिक स्थिति विशेष का आयाम है। विचार में आधुनिक होते हुए भी हम समसामयिक नहीं हो सकते, क्योंकि समसामयिकता का परिवेश इतना विस्तृत नहीं होता। डॉ नरेन्द्र मोहन का कथन है कि आधुनिकता समकालीनता का पर्याय नहीं है।"2

अतः कहा जा सकता है कि आधुनिकता एक युग विशेष का भाव है; जबकि समसामयिकता को वर्तमान से उत्पन्न स्थिति विशेष को कह सकते हैं। आधुनिकता के सन्दर्भ में जिस संवेदना की बात की जाती है, वह किसी हद तक समसामयिकता में भी दिखाई पड़ती है, किन्तु इस आधार पर दोनों को एक समझना भूल होगी। कि हम विचारों में आधुनिक होने के साथ-साथ समसामयिक भी होते हैं। समसामयिकता में वर्तमान जीवन के प्रति क्रियाशील होने का भाव है, समसामयिकता में समग्र युग को पकड़ पाना संभव नहीं होता; जबकि आधुनिकता में ऐसा संभव होता है। सामयिक आंदोलन के संदर्भ में लिखा जाने वाला प्रचारात्मक या सुधारवादी साहित्य समसामयिक साहित्य की कोटि में रखा जा सकता है। समकालीनता इन दोनों से पृथक है।

डॉ.रमेश कुतंल मेघ का अभिमत है कि "आधुनिकता को वह विचार विधि माना जा सकता है। जो क्लासिकल दर्शन के इतिहास में विच्छेद कराके नये दर्शन के इतिहास से गूंजती है और दर्शन इतिहास के साथ-साथ सामाजिक इतिहास एवं समाज विज्ञान को भी अनुस्यूत करने में समर्थ है। इस तरह आधुनिकता आधुनिक वाद कतई नहीं है। आधुनिकता दिमाग में उपजे सूक्ष्म दार्शनिक पर्यायों पर आधारित नहीं है। आधुनिकता तो सामाजिक सम्बंधों तथा सामाजिक परितर्वन की विचार विधि है। गिरिजाकुमार माथुर आधुनिकता को परिवर्तित भावबोध की उस स्थिति को मानते हैं; जिसका प्रादुर्भाव यान्त्रिक तथ्य और वैज्ञानिक विकास क्रम के वर्तमान बिन्दु पर आकर हुआ है।"3

निष्कर्ष स्वरूप आचार्य विनयमोहन शर्मा का आधुनिकता सम्बंधी निम्न कथन दृष्टव्य है। "आधुनिकता की काल सीमा निर्धारित करना कठिन है, क्योंकि यह काल-सापेक्ष और कालजयी भी है। जब भी काव्यधारा कथ्य या शिल्प में परम्परा से हटना चाहती है, वह आधुनिक होने लगती हैं। वह परम्परा से पोषित और वर्तमान युग प्रवृत्तियों से वेष्टित प्रवृत्ति है। यह विकसनशील भाव है जो काव्य को अजर बनाये रखता है। वह काल सापेक्ष इसलिए है कि उसमें प्रत्येक युग की नूतन चेतना निहित रहती है। उसमंे समसामयिक युग-प्रभाव और प्रगति के साथ अतीत की भाव समृद्धि भी परिलक्षित होती है। इस युग की आधुनिकता का वैशिष्ट्य उसका बौद्धिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। धर्म और ईश्वर के प्रति अनास्था और अन्तर्राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय स्वाधीनता की मान्यता।"4

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आधुनिकता संस्कृति की विकासोन्मुख दृष्टि की परिचायक है; जो समूची जीवन व्यवस्था को प्रभावित करती है। आधुनिकता अतीत से सम्बद्ध, वर्तमान से प्रतिबद्ध और भविष्य के प्रति उत्तरदायी होती है।

आधुनिकता और नवीनता

नवीनता का समसामयिकता से अनिवार्य सम्बन्ध है। जो नवीन है वह समसामयिक भी होगा ही। श्री नेमिचन्द जैन की यह मान्यता है कि "अनुभूति और दृष्टि की मौलिकता और व्यक्ति सत्ता और उसकी अभिव्यक्ति के रूप और शिल्पगत तत्वों की नवीनता और साहित्य का सर्वथा अनिवार्य लक्षण है, चाहे

वह नवीनता परम्परागत तत्वों के नये समूह में ही क्यों न निहित हो। इस अर्थ में नवीनता किसी भी युग के तथा लेखक के कृतित्व का बुनियादी मूल्य है जिसके बिना रचना-रचना नहीं होती, निरी पुनरावृत्ति, अनुकृति या केवल शब्द जाल मात्र रह जाती है।"5

नवीनता को परम्परा और आधुनिकता के पार्थक्य का प्राथमिक स्तर भी कहा जा सकता है। जब हम किसी भी दृष्टि, प्रक्रिया अथवा परिस्थिति के नवीन होने का सन्दर्भ देते हैं, तो प्रकारांतर से उसके एक विशेष अंश या अंशों को हम प्राचीनता से अलगाना चाहते हैं। नवीनता का आधुनिकता के सन्दर्भ में इतना ही महत्व है।

नवीनता और समसामयिकता का सामंजस्य आधुनिकता को विकासशील बनाने में सक्षम होता है। एक गतिशील प्रक्रिया होने के कारण आधुनिकता अपनी गति के सन्दर्भ इस सामंजस्य से अर्जित करती है। किन्तु आधुनिकता जहांॅ एक समग्र अवधारणा है, वहां नवीनता उसकी एक अतिरिक्त विशेषता है। जिस प्रकार काव्यशास्त्रियों ने अलंकारों को सौन्दर्य के साधन-रूप में स्वीकार किया है, ऐसे ही आधुनिकता के सन्दर्भ में नवीनता की शक्ति और सीमा उसके साधन-रूप होने में ही है। नवीनता परम्परा की नयी कड़ी के रूप में, एक नये विकास के रूप में, और साहित्य की एक नयी चेतना के संश्लिष्ट रूप में परिलक्षित होती है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में कहा जा सकता है कि "आधुनिकता नवीनता के काव्य के प्रतीयमान रूप को स्पर्श करती है, मांजती है, खरोंचती है, उसके अन्तर्निहित स्थिर और विकासमान धर्म में नही।"6 'डॉ. नगेन्द्र ने साहित्य के परिप्रेक्ष्य में आधुनिकता के स्वरूप का स्पष्टीकरण करते हुए आधुनिकता को कालयुग और विचारपरक तीन-अर्थों से अभिहित किया है।"7 सामान्य रूप से इस जीवन दर्शन को ही आधुनिकता के सूत्र बद्ध लक्षण के रूप में स्वीकार किया जा रहा है।

आधुनिकता, समसामयिकता तथा आधुनिक बोध के विषय में आलोचकों में मतैक्य नहीं है। एक मत आधुनिकता को मात्र समकालीन मानक मानते हुए शेष सभी बंधनों से मुक्त होने की घोषणा करता है। जबकि दूसरा मत इसे अधिक आन्तरिक एवं मूल्यगत भाव मानता है। लक्ष्मी वर्मा के अनुसार "आधुनिकता एक ऐतिहासिक विश्लेषण है; जो देशकाल के बोध के साथ-साथ सक्रियता की पुष्टि करती है। आधुनिकता का बोध युग बोध का द्योतक है। विचार में आधुनिक होते हुए भी हम समसामयिक नहीं हो सकते, क्योंकि समसामयिकता का परिवेश इतना विस्तृत नहीं होता।'8

"लक्ष्मीकान्त वर्मा ने अपने निबंधों में आधुनिकता, समसामयिकता, नवीनता आदि की तुलनात्मक विवेचना करते हुए इनमें परस्पर भेद का भी स्पष्टीकरण किया है। उनके अनुसार "आधुनिकता मूलतः गुणात्मक बोध है नितान्त समसामयिकता का बोध, क्षण के यथार्थ के प्रति दायित्व व्यक्ति की पारस्परिक आत्मनिष्ठा के प्रति आस्था, विवेक की संगति और व्यक्ति के सह-संबंध को विकसित करने की क्रियाशीलता में ही आधुनिकता परिलक्षति होगी। वस्तुतः आधुनिकता प्रत्येक परिवर्तन के साथ बदल जाने वाला देश कालगत विचार नहीं है। परिवर्तनशील मूल्य नहीं है। वह एक शाश्वत और चिरन्तन तत्व है। वह एक ऐसा अपरिवर्तनशील काव्य मूल्य है; जिसमें देशकाल के अन्तराल में होने वाले व्यत्तिरेक कोई अंतर उपस्थित नहीं करते। आधुनिकता अनुभूति का ही अभिधेय है। वर्मा आधुनिकता को देशकाल से सबंध करना पश्चिमी बीमारी मानते हैं। एक प्रकार से लेखक ने द्वितीय चिन्तनधारा का समर्थन

करते हुए उसे काव्य मूल्य स्वीकार कर अपने कथन को आलोचना से बचाने का प्रयास किया है। जहां तक आधुनिकता का सामान्य तात्पर्य लिया जाता है। वह देशकाल सापेक्ष ही है। इस मत के संबंध में दो मत नहीं हो सकते, क्योंकि प्रत्येक युग एवं देश में आधुनिकता रहती है। इस दृष्टि से भले ही उसे शाश्वत या चिरन्तन माना जाये। वस्तुतः वह देश काल सापेक्ष तत्व ही है।"9

आधुनिकता के घटक तत्व

आधुनिकता एक जीवन्त और गतिशील प्रक्रिया है। वस्तुतः आधुनिक के ग्रहण के लिए उसे कालगत सातत्य के समानान्तर ग्रहण करना आवश्यक है। कालगत सातत्य का यह बोध ही आधुनिकता को एक प्रकिया के रूप में प्रस्तावित और अर्थापित करता है। एक जीवन्त प्रक्रिया के रूप में आधुनिकता को समझ लेने के उपरान्त प्रश्न उठता है कि आधुनिकता के घटक या संघटक तत्व कौन से हैं, जो आधुनिकता के आकार ग्रहण करने में सर्वाधिक सक्रिय और महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

किसी भी विचारधारा या दृष्टि के घटक तत्वों को समझने के लिए सबसे पहले उन तन्तुओं का अन्वेषण आवश्यक है; जो उस तत्व को आकार देते हैं, तत्पश्चात यह समझना आवश्यक है कि उस तत्व से समाज ने किस प्रकार का प्रभाव ग्रहण किया है, और अंत में संरचना और प्रभाव के आधार पर उसका मूल्यांकन सम्भव है।

आधुनिकता के घटक तत्वों से आधुनिकता की उस आंतरिक संरचना विधान से होता है, जो परम्परा की गतिशीलता से सहज रूप् में जुड़ी रहती है। परम्परा और आधुनिकता के बीच जो अन्तर्विरोध है, उसे समझने के लिए भी आधुनिकता के इन घटक तत्वों का विश्लेषण आवश्यक है। आधुनिकता के प्रमुख लक्षण या घटक तत्व निम्नानुसार माने गये हैं।

क वैज्ञानिक चेतना

सामान्य अर्थों में ज्ञान का क्रमबद्ध एवं तार्किक विशेषीकरण ही विज्ञान है। यह विशेषीकरण जब बोध की छन्नी में छन कर एक दृष्टि का रूप धारण कर लेता है तो वही कार्य-कारण सम्बंध के प्रति बौद्धिक जिज्ञासा बन जाता है। वस्तुतः वैज्ञानिक चेतना से हमारा आशय कार्य-कारण सम्बंध के प्रति इस बौद्धिक जिज्ञासा से ही होता है। आधुनिक युग में व्यक्ति की आस्था के बौद्धिकीकरण में विज्ञान ने सर्वप्रमुख भूमिका का निर्वाह किया। किन्तु आधुनिकता के संवेदनात्मक आकार को निर्मित करने में विज्ञान की अपेक्षा वैज्ञानिक चेतना या वैज्ञानिक दृष्टिकोण का योगदान अधिक है। अब तक तकनीकी विकास को ही आधुनिकता का प्रमुख कारण माना जाता रहा है, किन्तु आधुनिकता एक जीवन बोध भी है। यह एक समग्र दृष्टि है; जो भौतिक विकास या यंत्रीकरण से सीधा प्रभाव ग्रहण नहीं करती, बल्कि यन्त्रीकरण से तो नये ढंग पर सोचने की प्रेरणा मिलती है। वस्तुतः यन्त्रीकरण और वैज्ञानिक चेतना में दृश्य और दृष्टि का भेद है।

व्यक्ति की मानसिकता पर वैज्ञानिक चेतना ने गुणात्मक और ऋणात्मक दोनों रूपों से प्रभाव डाले हैं। वैज्ञानिक चेतना ने एक ओर मानवीय गरिमा के प्रति व्यक्ति, की गरिमा को जागृत किया, तो दूसरी ओर इस दृष्टि के ग्रहण में उसने अपने को अकेला और अर्थहीन पाया; जिसमें मानसिक शक्तियों का सार्थक उपयोग हो पाता था। वैज्ञानिक प्रश्नाकुलता के कारण आज के मनुष्य का न पुराने मूल्यों के प्रति आस्था रही है और न वह नवीन मूल्यों की स्थापना कर सका। वैज्ञानिक चेतना से उद्भूत प्रश्नों ने

मानव को उलझनों में डाल दिया। विज्ञान ने मनुष्य को मानवेतर कृति पर नियंत्रण करने की प्रेरणा दी लेकिन विज्ञान हमें अपनी ही प्रकृति को नियन्त्रित करने में सहायक नहीं होता। क्योंकि हमने ज्ञान के क्रमबद्ध एवं तार्किक विशेषीकरण को विज्ञान न मानकर वैज्ञानिक चेतना मान लिया। साहित्य के सन्दर्भ में वैज्ञानिक चेतना का अर्थ नितांत विशेषीकृत बौद्धिक ज्ञान नहीं होता; बल्कि अपने परिवेश के यथार्थ परक साक्षात्कार से मनुष्य जिस संवेदनात्मक सम्पृक्ति की सिद्धि करता है उसका वैचारिक ग्रहण ही साहित्यिक संदर्भ में वैज्ञानिक चेतना है। जब हम इस वैज्ञानिक चेतना को सही अर्थों में अर्जित कर लेते हैं, तभी वह आधुनिकता के गुणात्मक रूप में सम्बद्ध होती है। साहित्य विज्ञान और वैज्ञानिक चेतना के भेद को समझ कर वैज्ञानिक चेतना को ग्रहण करता है।

ख प्रश्नाकुलता

प्रश्न हमारी जिज्ञासा के प्रतीक होते हैं। समग्र प्राणियों में केवल मनुष्य ही जिज्ञासा से प्रेरित होता है। यही वह तत्व है; जिसने उसे भौतिक और मानसिक रूप से विकसित होने में सर्वाधिक योग दिया। अपने मानसिक विकास के अनुरूप जैसे-जैसे उसकी बौद्धिक क्षमता पुष्ट होती गयी; वैसे-वैसे उसके प्रश्नों के गुणों और परिणामों में वृद्धि होती गयी। प्रश्न और जिज्ञासाएं आधुनिक काल से पूर्व भी थे। आधुनिक काल में प्रश्नों के साथ तार्किक विश्लेषण की गति तेज हुई है।

आधुनिक युग में वैज्ञानिक चेतना ने व्यक्ति की उन सम्पूर्ण मान्यताओं; क्षमताओं पर प्रश्नचिह्न लगाने प्रारम्भ कर दिए; जिनको उसने बिना किसी तर्क के स्वीकार कर लिया था। आधुनिकता व्यक्ति और परिवेश के अन्तर्सम्बधों को विश्लेषित करने के लिए विवेक को अपना प्रमुख आधार मानती है, क्योंकि रचनात्मक प्रश्नाकुलता विवेक से ही अर्जित की जा सकती है।

"विवेक अन्तरात्मा के सहायक तत्वों में सम्भवतः सबसे प्रमुख और सबसे विश्वसनीय है।'10

ग तटस्थ और निर्मम बौद्धिकता

यह बुद्धिवाद का युग है। बुद्धिवाद किसी आकस्मिक परिस्थिति का परिणाम नहीं; बल्कि यह व्यक्ति और परिवेश के बीच विद्यमान अन्तर्विरोधी सम्बंधों की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। यही कारण है कि आधुनिक युग की बौद्धिकता न तो समस्याओं के लिए आरोपित समाधानों को स्वीकार करने के लिए तैयार है और न समस्याओं के मसीही सरलीकरण के प्रति आश्वस्त है। फलतः यह बौद्धिकता अनिवार्यतः एवं अन्तिम रूप से द्वंद्वात्मक है। बौद्धिकता अपने मूल में मानक-विवेक को स्वीकार करके जीवन और जगत के यथार्थ परक प्रश्नों पर संवेदनशील दृष्टिकोण से विचार करती है। यह संवेदनशीलता ना तो रोमंेटिक भावबोध की भंाँति तरल होती है, और न यांत्रिक सोच की तरह जड़। वह यथार्थ का साक्षात्कार अपनी सम्पूर्ण मानवीय क्षमताओं के साथ करना चाहती है। बौद्धिकता यथार्थ को तटस्थ रूप में ग्रहण करती है, किन्तु यह उसकी कार्य पद्धति का प्राथमिक पक्ष है। यथार्थ के इस तटस्थ ग्रहण के बाद उससे मानवीय तादात्म्य ही इसका लक्ष्य है।

वर्तमान युग में व्यक्ति का अपना परिवेश से सीधा संघर्ष होता है। इससे पूर्व कोई भौतिकोत्तर शक्ति व्यक्ति और परिवेश के सीधे साक्षात्कार की संभावना को समाप्त कर देती थी। आज मनुष्य अपने सम्पूर्ण मानवीय संकट में अकेला पड़ गया है, क्योंकि परिवेश से टकराव के आघातों को झेलते हुए उसे कोई सहायक नहीं दिखाई देता।

अब उसके सामने दो विकल्प हैं या तो वह परिस्थितियों के सामने आत्मसमर्पण करके समझौता करे या पलायनवादी हो जाय अथवा वह यथार्थ का भाव से साक्षात्कार करे। आधुनिकता जिस बौद्धिकता को अपना घटक तत्व मानकर चलती है, वह दूसरे विकल्प को पूरी निष्ठा के साथ स्वीकार करती है। बौद्धिकता तटस्थ और निमर्म भाव से अपने परिवेश से जूझना और उसे समझना सिखाती हुई जीवन और साहित्य को अधिक सर्जनात्मक बनाने का उपक्रम करती है। इसलिये इस युग के साहित्य में बौद्धिकता प्रभावी है।

घ युग जीवन से संवेदनात्मक सम्पृक्ति

आधुनिकता अपना प्राण रस वर्तमान से उपलब्ध करती है। परम्परा को आधार मानते हुए भी वह अपने परिवेश के प्रति आत्यंतिक रूप से प्रतिबद्ध है। वह अपने आयाम को कितना ही विस्तृत कर ले उसकी अर्थवत्ता अपने परिवेश से जुड़ने में ही है। 'आधुनिकता' देशकालातीत धारणा नहीं हो सकती।

यह विचार दो रूपों में हो सकता है। 1. तटस्थ रूप में और 2. संयुक्त रूप में। तटस्थ रूप में हम जहाँ किसी भी तथ्य, वस्तु या स्थिति की यथावत और प्रतिक्रियाहीन व्याख्या करते हैं, वहाँ संयुक्त रूप से हम उसके प्रति अपनी संवेदनात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। वस्तुतः अपने देश-काल के प्रति तटस्थ होना आधुनिक व्यक्ति के लिए संभव नहीं रहा। वह चाहे-अनचाहे अपने परिवेश के दबावों को झेलता हुआ संघर्षरत है। वह चाहेअनचाहे अपने परिवेश, अपने युग से सम्पृक्त है। परिवेश में सेजूझते आदमी की आन्तरिक व्यथा के चित्र उकेरने में ही आधुनिक साहित्य की सार्थकता है। इस संघर्ष की अनुभूति एवं अभिव्यक्ति के लिए साहित्यकार को युग-जीवन से संवेदनात्मक सम्पृक्ति की अपेक्षा होती है जो अपनी समग्रता उसे आधुनिक बनाती है।

च स्वचेतना का पैनापन

जब हम आधुनिक के विश्लेषण में प्रवृत्त होते हैं तो स्वचेतना एक महत्वपूर्ण घटक तत्व के रूप में उभरती है, क्योंकि आधुनिकता का एक रूप अगर आत्मनिष्ठ और आत्मकेन्द्रित है; तो दूसरा समाजधर्मी और प्रगतिशील। इन दोनों के तनाव का चित्रण ही और दोनों के सन्तुलन की खोज समकालीन साहित्य में है। आत्मनिष्ठता और समाजधर्मिता के ये दो विपरीतोन्मुखी पक्ष जिस पर आकर एक हो जाते हैं; वह स्वचेतना ही है। व्यक्ति का जीवन और परिवेश के विषय में यथार्थ परक जागृत दृष्टिकोण ही स्वचेतना है यद्यपि उसका केन्द्र व्यक्ति होता है, किन्तु उसका प्रसार समाज के रेशे-रेशे में होता है। इस रूप में स्वचेतना आत्मनिष्ठ व्यक्ति को परिवेशगत समाजधर्मिता से जोड़ने वाली कड़ी है। आधुनिक साहित्य का उद्देश्य चेतना के सीमान्त का विस्तार है स्वचेतना का एक पक्ष जीवन और परिवेश में घुलनशील है, तो दूसरी ओर वह साहित्यिक सन्दर्भों को भी प्रभावित करती है और उनसे प्रभावित भी होती है। आधुनिकता के सन्दर्भ में स्वचेतना के महत्व का साहित्यिक अभिव्यक्तियों के कारण भी है। यह प्रत्येक कवि या साहित्यकार में स्वचेतना न्यूनाधिक रूप में पाई जाती है, किन्तु यह भी आवश्यक है कि स्वचेतना को स्थूल से सूक्षम संवेदन की ओर गतिशील बनाया जाए।

आज का रचनाकार यह स्वीकार करता है कि भले ही कोई लेखक वैचारिक दृष्टि से किसी बाह्य आग्रह को स्वीकार कर ले, किन्तु जब तक उस आग्रह के तत्वों का आभ्यन्तरीकरण नहीं होता; तब तक अन्तर्जगत के तत्वों पर उसका रंग नहीं चढ़ पाता। और तब तक उस विचार के अनुरूप रचित साहित्य

निष्प्राण और कृत्रिम ही रहेगा। जब व्यक्ति की स्वचेतना परिवेश के दबावों का निर्मम साक्षात्कार करने लगती है तब उसमें एक विशेष प्रकार का पैनापन आ जाता है। स्वचेतना की इस गहनता को ही उसके पैनेपन का संदर्भ देकर अर्थापित किया जाता है।

छ निरर्थकता-बोध की यंत्रणा मे आत्म साक्षात्कार की सर्जनात्मक लालसा

आधुनिकता एक जटिल किन्तु गतिशील प्रक्रिया है। उसमें जीवन के गुणात्मक संदर्भ ही सम्मिलित नहीं हैं; बल्कि वे तत्व भी अन्तर्भूत हैं; जो अपने आत्यन्तिक रूप में जीवन के लिए अस्वस्थ और अहितकर हैं। ऐसे तत्वों में अर्थहीनता पर विचार किया जा सकता है। यह अर्थहीनता दो रूपों में सक्रिय रहती है। एक ओर तो यह व्यक्ति की जिजीविषा को धीरे-धीरे सोखती है उसे जीवन के प्रति अधिक तटस्थ और संवेदनात्मक बनाती है। इस प्रकार निरर्थकता की अनुभूति व्यक्ति की चेतना को नकारात्मक और सकारात्मक दोनों रूपों में प्रभावित करती है।

व्यक्ति के आधुनिक-अनाधुनिक होने का सम्बंध इस बात से जोड़ा जाता है कि वह निरर्थकता को किस स्थिति तक ग्रहण करता है। यदि वह निरर्थकता को किसी सार्थक मूल्य चेतना के अभाव में ग्रहण करता है, और उसका निरर्थकता बोध उसे जीवन के प्रति संवेदनशील बनाते हुए उसे तटस्थ मूल्यांकन की प्रेरणा देता है; तो इसे उसकी आधुनिक मानसिकता का प्रतीक ही कहा जाएगा।

हमारे देश के जीवन और साहित्य में जिस प्रकार की अर्थहीनता दिखाई दे रही है; उसकी प्रतिक्रिया के रूप में कुण्ठा, खीझ ओर आक्रोश की अभिव्यक्ति ही उसकी अंतिम सीमा है। ''निरर्थकता का बोध यूरोप ने भी किया, किन्तु वहां इसका जन्म अनैतिकता की दुर्गन्ध से हुआ ऐसी अनैतिकता जो भौतिक समृद्धि की अति से प्रेरित हुई थी। भौतिक ऐश्वर्य की चकाचौंध में उसकी नैतिक क्षमताओं का ह्रास होता गया। यूरोप की अर्थहीनता उन बृहत्तर मूल्यों की तलाश में त्राण पाती है जो भोग की अंधी दौड़ मंे उसके हाथ से निकल गए थे। भारतवर्ष की स्थिति दूसरी है। यहाँ हम लोगों ने निर्धनता और अभावोंे में सांस ली है। परिणाम यह है कि भौतिक ऐश्वर्य की उद्दाम आकांक्षाओं में हमें उदात्त मानव-मूल्यों की प्रासंगिकता पर संदेह होने लगा है । यही कारण है कि यूरोप की निरर्थकता का कारण जहां मूल्यों का अभाव है, वहाँ भारत में इसका उदय भयंकर विपन्नता के फलस्वरूप मूल्यों के प्रति सन्देहशीलता से हुआ। यूरोप में कार्यबहुलता के कारण जीवन में अर्थहीनता का समावेश हुआ। यहाँ कर्म अभाव से निरर्थकता पनपी।''11

निरर्थकता बोध की यंत्रणा यथार्थ की सर्जनात्मक अनुभूति का सहज परिणाम हैं, जिसमें आत्म साक्षात्कार की प्रेरणा अथवा व्यक्तित्व विघटन दोनों सम्भावनाएँ रहती हैं। इस प्रकार यथार्थ की सर्जनात्मक अनुभूति के आधार फलक पर उपर्युक्त घटक तत्व आधुनिकता की संश्लिष्ट अवधारणा के रूप में आकार ग्रहण करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1 डॉ. जयसिंह नीरद दिनकर के काव्य में परम्परा और आधुनिकता, अनुराधा प्रकाशन 105, फूलबाग कॉलोनी सूरजकुंड रोड़ मेरठ - 250002, 1984, पृष्ठ 87

2 डॉ. हुकुमचंद राजपाल समकालीन कविता में मानव मूल्य, शारदा प्रकाशन 16/ एम-3, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली-110002, 1983, पृष्ठ 69

3 वही, पृष्ठ 70

4 वही, पृष्ठ 70

5 डॉ. जयसिंह नीरद दिनकर के काव्य में परम्परा और आधुनिकता, अनुराधा प्रकाशन 105, फूलबाग कॉलोनी सूरजकुंड रोड़ मेरठ - 250002, 1984, पृष्ठ 52

6 डॉ. हुकुम्चंद राजपाल, समकालीन कविता में मानव, शारदा प्रकाशन 16/ एम-3, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली - 110002, 1983, पृष्ठ 67

7 वही, पृष्ठ 67

8 वही, पृष्ठ 69

9 वही, पृष्ठ 68

10 डॉ. धर्मवीर भारती, मानवमूल्य और साहित्य, मंत्री भारतीय ज्ञानपीठ दुर्गाकुण्ड रोड़ वाराणसी, 1960, पृष्ठ 21

11 डॉ. जयसिंह नीरद दिनकर के काव्य में परम्परा और आधुनिकता, अनुराधा प्रकाशन 105, फूलबाग कॉलोनी सूरजकुंड रोड़ मेरठ - 250002, 1984, पृष्ठ 43-44